रविवार, दिनाँक 30-06-2024 को सत्संग में हुए वचनों का संक्षिप्त विवरण

कार्यक्रम

आध्यात्मिक क्रांति के तहत् आओ सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में विदित आत्मिक ज्ञान प्राप्त करें

और अपनी वास्तविक पहचान कर आत्मोद्धार करें।

तेरा रूप इलाही सोहणियां सच्ची सरकार जी

तेरे हत्थ विच डोर साजन जी सारे संसार दी

सजनों हम सबको इस सत्य को स्वीकारना होगा कि जिस आद्-पुरुष सृष्टिकर्त्ता ने सृष्टि की रचना की है, उस सृष्टि के हर जीव की डोर उसी के ही हाथ में है। इस संदर्भ में हमें सावधान रहना है कि उसके हाथ व साथ से छूटकर हमारा ख़्याल संसार में भटक व अटक न जाये। अतः चाहे जो भी हो इस वास्तविकता में हम सबने बने रहना है। आज का कार्यक्रम सजनों इसीलिए रखा गया है। अतः आज की सारी बातचीत यानि एक-एक शब्द को बड़े ध्यानपूर्वक सुनना व इस हेतु अफुरता से बैठना। पहले भजन से शुभारम्भ होगा उसमें भी एक सन्देश होगा कि आपको जीवन किस हेतु प्राप्त हुआ है और वह कारज सिद्ध करने के लिये आपने किसके संग प्रीत जोड़नी है। आपको आज के भजन और कीर्तन से यह सब समझ आ जायेगा। अतः आपका कर्त्तव्य बनता है कि जगत की तरफ से विमुक्त हो, जो आदेश हमें शास्त्र दे रहा है उन महान शब्द विचारों के प्रति हम समर्पित हो जाएं और ए विध् आत्म-सुधार कर, आत्मोद्धार कर लें व जन्म-मरण के चक्र-व्यूह से आजाद हो जाएं।

बोल सजन श्री शहनशाह महाबीर बजरंग बली जी की जय

बोल सजन श्री शहनशाह महाबीर बजरंग बली जी की जय

बोल सजन श्री शहनशाह महाबीर बजरंग बली जी की जय

अब ध्यान से भजन सुनोः-

खबरदार खबरदार खबरदार रहो, महाबीर जी दुनियां विच आ गये ने।।

आत्मपद दा रस्ता बता रहे ने, महाबीर जी दुनियां विच आ गये ने।

मोह माया दी नींद विच घूक सोये, महाबीर जी आके जगा रहे ने।

भैणां पाप न करो धर्म मार्ग चलो, बली ए उपदेश सुना रहे ने।।

शास्त्र महाबीर दा रस्ता बताया ए, बली सांवले चरण दिखा रहे ने।

सांवले चरणां दे मालिक महाबीर जी, दर्शन सारियाँ भैणां नू करा रहे ने।।

किसे नू युक्ति देवन किसे नू उपदेश देवन, सिया राम लषण नू मिला रहे ने।

दिन चाह विच गुजरे रातीं नींद आवे, ओ शान्ति उपदेश सुना रहे ने।।

जेहड़ी भैण महाबीर जी दा नाम ध्यावे, ओहनू मुक्ति दी पदवी दिवा रहे ने।

कलयुग ने है सब नू घबराया, महाबीर कलयुग नू आप हटा रहे ने।।

अग्गे सेवकां नू महाबीर जी भेजदे रहे, हुण चरणां दे मालिक आप आ गये ने।

सदके जावां सदके जावां महाबीर जी तों, जेहड़े सब दियां आशा पुजा रहे ने।।।

दासी चरणां तों बलिहार जावे, सानू भुलियां नू रस्ते ला रहे ने।

खबरदार खबरदार खबरदार रहो, महाबीर जी दुनियां विच आ गये ने।।

यह सब सुनने के पश्चात सजनों आपने अपने आप को भाग्यशाली समझना है क्योंकि कलुकाल के दुष्प्रभाव के कारण संसार में उलझे हुए इन्सानों को सद्मार्ग पर लाने के लिये, सजन श्री शहनशाह हनुमान जी स्वयंमेव दुनियां में आ गए हैं। सच्चेपातशाह जी कहते हैं कि इस अटल विश्वास के साथ अपना ख़्याल-ध्यान उन संग करके उनके वचनों पर सब कुछ न्यौछावर कर दो। इसके अतिरिक्त सजनों इस भजन के तहत् सजन श्री शहनशाह हनुमान जी सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ द्वारा हम बुद्धिहीन इन्सानों को पुनः विवेकशील बनाने के लिये, आत्मपद के रास्ते पर चलने के नीति-नियम और युक्ति बता रहे हैं। जैसा कि अभी सुना है कि-

'किसे नूं नाम देवन, किसे नू उपदेश देवन',

सिया राम लषण नू मिला रहे ने।

दिन चाह विच गुजरे रातीं नींद आवे, ओ शान्ति उपदेश सुना रहे ने।।

याद रखो आत्मकल्याण हेतु उनकी युक्ति व उपदेश दोनों ही महत्त्व रखते हैं। अतः जो भी उनकी युक्ति व उपदेश प्रवान करेगा यानि जो भी उनके वचनों की श्रद्धापूर्वक पालना करेगा उसको मन की शान्ति प्राप्त होगी ही होगी। मन शान्त होगा तो निःसन्देह विवेकशील बन सकोगे और सत्य को ग्रहण कर, बुद्धिमान हो जाओगे। इस तरह फिर कदापि झूठ ग्रहण नहीं करोगे। सार रूप में सजनों हमें यह बात समझ आ जानी चाहिये। इस संदर्भ में हम जिस तरह से मानसिक तौर पर उलझे पड़े हैं यानि हमारी मानसिक अवस्था अस्थिर हुई पड़ी है, अपनी उसी मानसिक अवस्था को स्थिर बनाने के लिये, हमें मनमत के चलन के अनुसार बुरे स्वभाव छोड़ने होंगे। सजनों आज का यह कार्यक्रम आपका आत्म-सुधार करने के निमित्त ही है। अगर आज भी ऐसा करने के लिये दृढ़-संकल्प नहीं होते तो आप अपने वैरी खुद हो। इस विषय में सजन श्री शहनशाह हनुमान जी आत्मज्ञान बख़्श, आत्मपद की प्राप्ति कराने हेतु, हम सबको सद्ज्ञान प्रदान कर जाग्रत कर रहे हैं ताकि हम आत्म-विस्मृत इन्सान अपनी आत्मिक-शक्ति को पहचान आत्म-स्मृति में आ जायें। इस तरह मानव रूप में हम अपनी कुदरत प्रदत्त शक्तियों से परिचित हो उन्हें पहचान जायें और मानवता के प्रतीक बनकर, निर्विकारी जीवन जीने के योग्य बन एक शक्तिशाली इंसान की भांति, आत्म-निर्भर होकर, आत्म-विश्वास के साथ जगत का उद्धार करने का परोपकार कमायें।

इस सन्दर्भ में सजनों यकीन मानो ऐसा सुनिश्चित करने पर ही निष्काम कर्म करने में सक्षम हो सकते हो अन्यथा कामना आपको ऐसा सतायेगी कि आप उससे दुःखी हो जाओगे। ऐसे में कामना पूरी न होने पर क्रोध आपके रोम-रोम, रग-रग को खा जायेगा और आपके शरीर व मानसिकता दोनों को तोड़ कर रख देगा। जब आप पूर्णरूपेण टूट गये और 'काम' के आगोश में सो गये तो क्रोध के साथ-साथ लोभ, मोह, अहंकार सब रूप धारकर आ जायेंगे और आपकी होश-ओ-हवास मार आपको मृत इन्सान बना देंगे। इस दुर्गति से बचने के लिये ही सजनों सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ कह रहा है कि हे मानव ! समय की चाल को समझ और इस पर विचार कर कि कलियुग से आपका छुटकारा कौन करा सकता है?

इस परिप्रेक्ष्य में समझो कि समय को दृष्टिगत रखते हुए सजन श्री शहनशाह हनुमान जी ही कलियुग को मिटाकर पुनः सतवस्तु का राज्य स्थापित करने वाले हैं। वह ही राजाओं के राजा हैं और उनके संग बने रहने में ही हमारी शान है। उनका संग करने पर ही हम अपनी यथार्थ शान को प्राप्त हो पायेंगे और फिर हमें आभास होगा कि अपनी भूल के कारण ही हमारी सभी वृत्तियाँ विकृत हो गयी हैं। उन्ही विकृत्तियों के दुष्प्रभाव से ही हमने अपना जीवन रोल दिया है। अतः सजनों आज दृढ़-निश्चय लो कि आपने सजन श्री शहनशाह हनुमान जी का संग करना ही करना है और इस हेतु उनके सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में विदित एक-एक वचन को पढ़ने, समझने और उन पर क्रियाशील होने में कमजोर नहीं पड़ना। आप ऐसा करने में समर्थ हो जाओ और अपनी इच्छा-शक्ति, ज्ञान-शक्ति और क्रिया-शक्ति का समुचित प्रयोग करने में कामयाब हो जाओ, इसके लिए आपको इन शक्तियों के विषय में सारा आज समझाया जायेगा ताकि आपके मन में सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के वचनों की पालना करने के प्रति प्रबल इच्छा पैदा हो। सजनों मानो कि जैसे ही आपके अन्दर प्रबल इच्छा उठेगी वैसे ही सजन श्री शहनशाह हनुमान जी, जीवन लक्ष्य 'मोक्ष' को कैसे प्राप्त करना है उसके प्रति आपको ज्ञान में आने की युक्ति बख़्श देंगे और साथ ही क्रिया करने की विधि से भी अवगत करा देंगे। उस युक्ति का अनुशीलन करने पर आपका हर कर्म/क्रिया सुकर्म होगा। यहाँ याद रखो कि जब हर कर्म सुकर्म होता है तो आदमी सत्यनिष्ठा से धर्मपरायण कहलाता है और जो धर्मपरायण कहलाता है वह 'ईश्वर है अपना आप' के विचार पर सुदृढ़ता से हर क्षण स्थिर बने रह ब्रह्मभाव से जगत में विचरता है और सर्वव्यापक भगवान के सत्य को पाकर शक्तिशाली हो जाता है। बात समझ आई सबको?

'हाँ जी'।

तो फिर अब ध्यान से कीर्तन सुनो और जो जीवन लक्ष्य उपरोक्त भजन में बताया गया है यानि आत्मपद की प्राप्ति, उसे कैसे पाना है उसकी युक्ति सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के मुख से सुनते-समझते हुए, पूर्ण समर्पण कर दो। याद रखो इस समर्पण में धोखा नहीं होना चाहिये क्योंकि समर्पण का अर्थ ही है स्वयं को अर्पित करना। अतः आप भी उनके निमित्त तन-धन-मन से समर्पित हो कहो कि हे प्रभु ! अब से जो आपका हुक्म या आज्ञा होगी उसका हर हाल में पालन होगा। सजनों यह सजन श्री शहनशाह हनुमान जी का आदेश है जो कि दुनियाँ में आ गये हैं। अब जब वह आपको समयानुकूल आदेश दे रहे हैं तो उसे मानो और युक्ति को निम्न कीर्तन अनुसार समझोः-

(महाबीर जी के मुख के शब्द)

शब्दः-

असां कुहा रहे साजन जी जल्दी जाना है दरबार।

जय विजय हार पाय रहे श्री राम चरणों ते सीस धरो बारम्बार।।

(श्री रामचन्द्र जी कह रहे हैं)

सतवस्तु दी बात सुनाऊं, सुन लौ ध्यान लगा के।

ओ बात है हीरा अनमोल, सुने जेहड़ा कुदरत विच आके।।

हे इन्सान इन्सानी दिखा, अपना आप पहचान करे।

खालस सोना ही अनमोल, ओन्हां दे वचन प्रवान करे।

हां ओन्हां दे वचन प्रवान करे वाह ओन्हां दे वचन प्रवान करे।।

कुदरत ने इन्सान बनाया, ओहदे विच इक जीव बना के।

आत्म पद दी खोज करो, अपनी इन्सानी दिखा के।

वचन प्रवान हुंदियां उस वल ध्यान धरे, किस तरह उस दी शान बढ़े।।

रूप रंग न रेखा राहवे रोशन अपना नाम करे।

हां रोशन अपना नाम करे, वाह रोशन अपना नाम करे।

रोशन नाम हुंदियां हर अन्दर रोशनी बढ़े।।

फुरने दी सृष्टि दे अनुसार दर्शन करन नूं खड़े।

बिन सूरजों प्रकाश है उसदा, सुक्के दरख़त ओ हरे करे।

हां सुक्के दरख़त ओ हरे करे वाह सुक्के दरख़त ओ हरे करे।।

सजनों आज का दिन आपके लिए मंगलकारी है क्योंकि आज आप अपने जीवन का यथार्थ मकसद यानि असली लक्ष्य प्राप्त करने जा रहे हो। अतः जैसे सजन श्री शहनशाह हनुमान जी ने पहले भजन के द्वारा और अब कीर्तन के द्वारा समझाया है उस अनुसार 'आत्मपद की भाल करो'। यहाँ जानो कि जब किसी इन्सान को कुछ समझाया जाता है तो वह वास्तव में भटका हुआ इन्सान होता है। आप सब भी वर्तमान युग में भटके हुए हो इसलिए समयानुकूल आप कलुकालवासियों को समझाने की आवश्यकता आन पड़ी है। अतः मानो कि आप सबके मन संसार में भटके पड़े हैं और आपके मन में संसार बसा पड़ा है। अब जिसके मन में संसार बसा पड़ा हो, वह सजन अफुर अवस्था में कदापि नहीं आ सकता यानि वह मन की अफुरता साधकर अपने स्वरूप को नहीं पा सकता क्योंकि उसके मन में संकल्प-विकल्प की तरंगें इस तरह उठती रहती हैं कि वह कुछ पहचान ही नहीं पाता कि क्या हो रहा है। इसलिए क्या करना है, वह समझ ही नहीं पाता। सजनों मानसिक रूप से इस तरह उलझना मानसिक निम्नता का यानि निम्न स्तर का सूचक होता है और उसे देख कर लगता है कि यह इन्सान बुद्धिहीनता की ओर बढ़ रहा है और इसकी बुद्धि अनिश्चयात्मक हो गई है। इसलिए वह किसी भी बात का तुरन्त निश्चय नहीं ले पाता।

इस सन्दर्भ में हम यहाँ आपको बता दें कि मन इतनी उपजाऊ धरा है जिसमें जैसे ही इच्छा रूपी एक बीज बोवो, वहीं तत्क्षण हज़ारों इच्छाओं की कपोलें फूट पड़ती हैं और फिर ख़्याल उन्हीं में उलझ जाता है। ऐसा इन्सान निश्चय ही नहीं कर पाता कि ठीक क्या है और गलत क्या है। यही भूल, यही अज्ञान मन की अशान्ति का कारण होता है। इस सन्दर्भ में सच्चेपातशाह जी कहते हैं कि जो भी बोवो वह सार्थक ही बोवो। वह कहते हैं कि यह कुदरती ग्रन्थ भण्डार है, इस सार्थक भण्डार से वचनों के रूप में लो और उसी को बीजो। फिर देखो कि यह क्रिया कैसे आपके मन को प्रफुल्लित कर देती है और इसके व्यावहारिक रूप से इतना सुगन्धित बना देती है कि इसकी सुगंधि देवलोक की सुगन्धि को भी मात कर देती है। इस तरह आप देवताओं से भी ऊपर उठकर अपने स्वरूप को पा सकते हो। फिर कह रहे हैं 'ईश्वर है अपना आप' के विचार पर स्थिरता से खड़े हो जाओ। यही है - नौजवान युवा अवस्था। अतः केवल अच्छे विचारों का ही सेवन करो यानि उन्हें ही मन में ठहराओ। ऐसा करने से सत्यज्ञान स्वयंमेव विकसित हो जाएगा। एक दफा सत्यज्ञान विकसित हो गया तो बाहरी ज्ञान कदापि नहीं भायेगा, उसकी आँच से भी आप दूर रहोगे। जब उसकी आँच से ही दूर रहोगे तो सद्ज्ञानी बन जाओगे। ऐसे में 'काम' अन्दर जाग्रत ही नहीं हो सकेगा यानि वह फिर सुप्त अवस्था में रहेगा। अब जब 'काम' सुप्त अवस्था में

है तो बाकी विकार कैसे सता सकते हैं? - नहीं सता सकते, सवाल ही पैदा नहीं होता क्योंकि वह तो 'काम' की फौज है। जब उनका सरदार ही चला गया तो फौज क्या करेगी, वह तो स्वतः ही भाग खड़ी होगी। अब आपने सरदार को मार मिटाना है और जब आपने ऐसा पुरुषार्थ दिखा दिया तो आपका मन आनन्दमय अवस्था में आकर आपका साथी बन जायेगा और आपको दुनियाँ में उलझाने के स्थान पर अपने गन्तव्य यानि सच्चे घर की ओर बढ़ने में पूरी सहायता करेगा। तद्नुरूप आप फिर अपने घर परमधाम पहुँच विश्राम को पा जाओगे। जानो यह द्वारा सजन श्री शहनशाह हनुमान जी का है और इस द्वारे का जो भी सदस्य उनके वचनों को प्रवान करता है, वह निश्चित रूप से परमधाम पहुँच विश्राम को पाता है, यह एक अटल सत्य है।

सजनों आज के दिन आपको स्वयं को समझाने का सुनहरी अवसर मिला है। इसका लाभ उठाते हुए यह फैसला लो कि आपने कुकर्म-अधर्म करते हुए यानि अमानवीय चलन अपनाकर जन्म-मरण के चक्रव्यूह में फँसकर त्रास भुगतनी है या फिर मोक्ष को पाकर विश्राम को पाना है। फैसला आपके अपने हाथ में है और अपना परिणाम खुद आपने ही लेना है। अतः दुनियावी बातें करना-सुनना तुरन्त छोड़ दो। इसके स्थान पर जो जीवनोपार्जन हेतु आवश्यक है, उस आवश्यकता के अनुसार ही हर क्रिया करो। जानो यह क्रिया आपके मन में उठने वाली इच्छा पर निर्भर होगी। जैसी इच्छा होगी, वैसी ही क्रिया करोगे। क्रिया तभी परिपूर्ण होगी यदि उस इच्छा की पूर्ति हेतु परिपूर्ण ज्ञान होगा। आगे जानो कि इच्छा शक्ति, ज्ञान शक्ति तथा कर्म शक्ति, यह तीनों ही शक्तियाँ परमात्मा की हैं क्योंकि परमात्मा की इच्छा से ही आत्मिक ज्ञान आया और जगत की रचना हो गयी। तो अब आप भी अपनी शक्तियों को पहचानने के लिये तैयार हो जाओ। अब यहाँ से जो बुलेगा उसके एक-एक शब्द को समझकर मान लेना है कि मैं और कुछ नहीं केवल परमात्मा ही हूँ और यह भी मान लेना है कि यह तीनों शक्तियाँ मेरे पास उपलब्ध हैं। अब इनका प्रयोगात्मक ढँग क्या है उसके लिये आत्मिकज्ञान प्राप्त करना पड़ेगा। आत्मिकज्ञान मध्यस्थ है यानि इधर इच्छा है, तो दूसरी तरफ इच्छा पूर्ति किस प्रकार होनी है, उस कर्म शक्ति का प्रयोगात्मक ज्ञान है, ताकि सब कुछ निर्विघ्न चले। इन दोनों के बीच में आत्मिकज्ञान है, कोई बाहरी ज्ञान नहीं है। यह उस कुदरती साईन्स या कुदरत का खेल है जिसने आपको मानव रूप दिया है तथा जो नियमबद्ध चलता है। अतः मानव चोला लेकर आप अपनी जो भी क्रिया करने आये हो उसके लिये तत्पर हो जाओ और परमात्मा के सुपुत्र कहलाओ। सुपुत्र बनने की इच्छा लेकर सब पूरी ताकत लगाकर बोलोः-

आध्यात्मिक क्रान्ति - ज़िन्दाबाद

आध्यात्मिक क्रान्ति - ज़िन्दाबाद

आध्यात्मिक क्रान्ति - ज़िन्दाबाद

अब सबसे पहले तीनों शक्तियों का शाब्दिक अर्थ जानो। तदुपरांत तीनों शक्तियों को क्रमशः हर पहलू से सुनना-समझना और इन शक्तिओं को धारण करने के प्रति अपने मन में तीव्र उत्कण्ठा पैदा कर मानवता के प्रतीक बन जाना।

अंतर्निहित शक्तियों से परिचय

सजनों जैसा कि सब जानते ही हैं कि परमात्मा यानि सबसे श्रेष्ठ चैतन्य, सत्-चित्त-आनन्द स्वरूप, परम तत्व की तीन प्रमुख शक्तियाँ हैं यथा इच्छाशक्ति, क्रियाशक्ति व ज्ञान शक्ति। इस संदर्भ में जानो इच्छाशक्ति परमेश्वर की वह शक्ति है जिसके द्वारा वे जगत की सृष्टि करते हैं। इसलिए तो कहते हैं कि सर्ग यानि सृष्टि इच्छा का ही परिणाम है। इस इच्छा शक्ति को महाशक्ति/ब्रह्म शक्ति/लीलाशक्ति/आदिशक्ति व योगमाया अर्थात् परमात्मा की नित्य क्रीड़ा करने वाली शक्ति भी कहते हैं। इसके अतिरिक्त सामान्य अर्थों में देखें तो इच्छाशक्ति वह इच्छा है जिसके साथ संकल्प की शक्ति जुड़ी होती है। परमात्मा की दूसरी शक्ति है ज्ञान-शक्ति यानि आत्मसाक्षात्कार, आत्मतत्व दर्शन व आत्मबोध करने की शक्ति। इसे ज्ञान, कौशल, परिज्ञान ग्रहण करने की यानि जानने-समझने आदि की प्राकृतिक शक्ति या सम्यक् बोध भी कहते हैं तथा इसी से विचाराधिकार भी होता है। तीसरी शक्ति है क्रिया-शक्ति अर्थात् कोई कार्य, कर्म व व्यवहार करने की शक्ति। यह शक्ति भी ईश्वर से उत्पन्न हुई है तथा इसी को प्रकृति और माया यानि ब्रह्मांड की सृष्टि का कारण माना जाता है। परमात्मा का प्रतिबिम्ब होने के नाते सजनों जीव भी इन तीनों शक्तियों से सम्पन्न है और उस से पोषित हो स्वयं को अभिव्यक्त करता है। कैसे - आओ इस हेतु जीव के संदर्भ में इन तीनों शक्तियों का संज्ञान लेते हैं।

इच्छा शक्ति

साधारण अर्थों में इच्छा/कामना करने या उसे पूरा करने की शक्ति, संकल्प शक्ति या मानसिक दृढ़ता को इच्छा शक्ति कहते हैं। मन में आए किसी विचार को दृढ़तापूर्वक

क्रियान्वित करने अथवा प्रयोजन/उद्देश्य सिद्धि हेतु इस शक्ति का प्रयोग किया जाता है। अन्य शब्दों में इच्छा शक्ति वह आंतरिक यानि मानसिक क्षमता है जो दृढ़ निश्चय, आत्मविश्वास और मानसिक दृढ़ता के आश्रय से, इंसान को किसी कार्य को करने, उद्देश्य को पूरा करने या लक्ष्य को प्राप्त करने में सक्षम बनाती है तथा विपरीत परिस्थितियों में चुनौतियों का सामना करते हुए आगे बढ़ने, संघर्ष करने और अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के प्रति प्रतिबद्ध बनाती है। मनःशक्ति या मनोबल भी इच्छाशक्ति का ही पर्याय है तथा इस शक्ति द्वारा मनुष्य जो भी चाहता है उसे प्राप्त करने की क्षमता रखता है। ज्ञात हो कि मनुष्य में जन्मजात ही इच्छा करने व उसी को परिपूर्ण करने की क्षमता होती है परन्तु यहाँ आवश्यकता होती है राग-द्वेष से मुक्त हो, इच्छा की प्रकृति को समझने की व उसके प्रति अपने दृष्टिकोण को सही तरीके से विकसित करने की। अतः मन में जब भी इच्छाएँ उठें तो उनका निरीक्षण करो और सांसारिक इच्छाओं से परे, सार्थक दिव्यता की ओर ले जाने वाली इच्छाओं की पूर्ति के प्रति ही अपनी इच्छाशक्ति को सुनियोजित करो।

इस संदर्भ में जान लो कि सकारात्मक दृष्टिकोण, मन की दृढ़ता अथवा धीरता, ध्यान/एकाग्रता, आत्ममूल्यांकन, आत्मनियन्त्रण/आत्मसंयम/आत्मानुशासन, अभ्यास आदि के द्वारा इच्छाशक्ति को पुष्ट किया जा सकता है। परन्तु इस हेतु आलस्य त्याग, आसक्ति त्याग तथा सुख-त्याग के साथ-साथ निरंतर अभ्यास व समय प्रबंधन करना आवश्यक होता है।

आगे जानो इच्छा शक्ति हमारे जीवन की दिशा और गुणवत्ता को बहुत हद तक प्रभावित करती है क्योंकि अच्छी आदतों का निर्माण करना और बुरी आदतों का त्याग करना इच्छा शक्ति के माध्यम से ही संभव हो पाता है। यह ही हमें अपनी आदतों और व्यवहारों को नियंत्रित कर, धैर्यपूर्वक जीवन जीने का व अनुशासन और संयम में बने रहने का पाठ पढ़ाती है। इसी के सहारे इंसान आत्मनियंत्रण रख, आत्मज्ञान प्राप्त कर, आत्मविकास कर सकता है और आत्मोन्मुख हो, निज परमात्म स्वरूप को प्राप्त कर सकता है।

इस महत्ता के दृष्टिगत सजनों अभ्यास द्वारा, जीवन के सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कार्य यानि मोक्ष प्राप्ति के प्रति अपनी इच्छा-शक्ति को पुष्ट करो और मन को लक्ष्य प्राप्ति की ओर ही अभिप्रेरित रखो। आशय यह है कि मनोनिग्रह द्वारा अपनी इच्छाशक्ति का विकास, जो अनुकूल है यानि यथार्थ व सत्य तत्व है, उस का ग्रहण करने में करो। इस संदर्भ में मानो कि हम जो कुछ भी करना चाहते हैं उसकी सफलता का बीज हमारी इच्छाशक्ति में ही निहित है तथा जब हम इन उत्तम व सर्वहितकारी 'प्रयोगों व अभ्यास' में मन-चित्त को लगा

देते हैं, जिनके प्रति अभी हमें आलस आता है, तब इच्छा-शक्ति द्वारा बार-बार उन्हें करने में हमें आनन्द आने लगता है। फलतः कठिन कार्य भी आसान हो जाता है तथा उसे करने की इच्छा बलवती होती जाती है। ऐसा होने पर जो पहले दूभर तथा दुष्कर प्रतीत होता है वह हमारी प्रकृति व स्वभाव का हिस्सा बन जाता है और उसे फिर साधने की आवश्यकता नहीं रह जाती।

अतः बार-बार असफल होने पर भी निराश न होवो अपितु मनःसंयम साधने की हर असफलता में, नवीन उत्साह से पूरित हो, प्रयत्नपूर्वक लगन से प्रयासरत रहो। याद रखो इस तरह जब लगातार सकारात्मकता से पूरे आत्मबल के साथ अपने विचारों और गतिविधियों को, इच्छा शक्ति के बलबूते पर, एक ही आत्मतत्व के ग्रहण में पूरी तरह निष्ठापूर्वक लगाए रखोगे तो निश्चित रूप से ध्येय साकार रूप में परिणत यानि प्रगट हो जाएगा क्योंकि उसका सम्बन्ध सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक अनंत शक्ति के स्रोत परमात्मा से हो जाएगा। ऐसा होने पर वह इच्छा का रूप न रहकर, ईश्वरीय इच्छा/अनुग्रह में तबदील हो जाएगा। फिर सफलता के लिए जो कुछ भी आवश्यक है, वह अपने आप पास आता चला जाएगा और हमारे कदमों को उचित दिशा की ओर बढ़ाता चला जाएगा। इस तरह फिर कोई प्रयास करने की आवश्यकता नहीं रहेगी और लक्ष्य स्वयंमेव सध जाएगा।

इस बात को समझते हुए सजनों इच्छाशक्ति को जो भी बातें या विषय विकृतियाँ दुर्बल अथवा निस्तेज बनाती हैं, उन्हें दूर कर व उनके स्थान पर अनुकूल तत्वों को उपस्थित कर यानि सद्गुणों का विकास कर, स्वयं को शक्ति सम्पन्न बनाओ। याद रखो इस हेतु सत्य की संगति यानि सत्-संगति अनिवार्य है। सत्संगति के बल पर अपनी चेतना पर नज़र रखो व आत्मनिरीक्षण की आदत डालो। इस तरह अपने विचारों और व्यवहार का विवेकशक्ति के बलबूले पर निरीक्षण करते रहो। फिर इस क्रिया द्वारा जैसे ही अपने अन्दर बुरी आदतों या प्रवृत्तियों के लक्षण स्पष्ट नज़र आएँ तो प्रखर इच्छाशक्ति के साथ उनका विरोध करो यानि स्वयं को बार-बार यह कहकर विश्वास दिलाओ कि मैं इसे छोड़ सकता हूँ और ऐसा ही करके दिखाऊँगा। एक बार ठान लिया तो फिर अपनी बात से कभी पीछे मत हटो। याद रखो इस प्रकार जब हमारा शरीर, हमारा मन व हमारी आत्मा एकजुट होकर लक्ष्य प्राप्ति में रत रहते हैं तो इच्छाशक्ति को बल मिलता है और ख़्याल की अनर्गल यानि संसार की ओर व्यर्थ उड़ान थम जाती है। परिणामतया हम सत्यनिष्ठा व तत्परता से प्रगति की ओर उन्मुख हो, एकाग्रचित्तता से लक्ष्य प्राप्ति की तरफ विचारपूर्वक बढ़ने में सफल हो जाते हैं

और वस्तुतः पशु श्रेणी से ऊपर उठकर अपनी कलाकृति के अनुरूप अपना मानव रूप प्रदर्शित करने में कामयाब हो जाते हैं। आप भी सजनों ऐसे ही कामयाब मानव बन सको इस हेतु आत्मज्ञान प्राप्ति द्वारा, अपनी इच्छाशक्ति को सही दिशा में सुनियोजित कर, आत्मपद की ओर कदम बढ़ाओ और अपने सच्चे घर परमधाम पहुँच विश्राम को पाओ।

सजन जीः- हम मानते हैं कि अब से पहले इस शक्ति के अन्तर्निहित होने का ज्ञान किसी को नहीं होगा। अब जब आज परिचय हुआ ही है तो सार रूप में अपने यथार्थ मानव-धर्म के अर्थ को समझो। मानव-धर्म का अर्थ है कि जीवन में जो कुछ भी करो, सर्वहित को दृष्टिगत रखते हुए ही करो। यह परमेश्वर का सर्व-शक्तिमान, सर्वज्ञ व सर्वव्यापक होने का द्योतक है। यह मानव के लिये यथार्थतापूर्ण जीवन जीने की व निष्काम भाव से परोपकार कमाने की शुभ बात है। यहाँ याद रखना है कि परोपकारी ही ब्रह्मज्ञानी कहलाता है और ब्रह्मज्ञानी ही अन्त परमपद को पा परमधाम पहुँच विश्राम को पाता है। पर इस हेतु अपने मन में उठने वाले हर भाव, हर इच्छा के ऊपर नजर रखनी होती है ताकि पता चले कि इच्छा का रूप नकारात्मक है या सकारात्मक है। सतर्क रहो कि दिनचर्या के समय हमारे मन में कोई भी नकारात्मक भाव न उठे यानि हमारे स्वभाव के अन्तर्गत न हो जाये। ऐसा बदलाव आने पर हमारे मन में ऐसी प्रबल इच्छाएँ उठेंगी कि हमारी रुचि अपने आप ही आत्मज्ञान प्राप्त करने के प्रति और अधिक विकसित हो जाएगी। याद रखो आत्मिकज्ञान प्राप्त किये बिना हम कोई भी मनो इच्छा सर्वहित के निमित्त निष्काम भाव से नहीं कर सकते। फलतः कामनायुक्त किए हुए कर्म या क्रिया का फल केवल हमें ही मिलेगा। इसके विपरीत सर्वहितकारी क्रिया का, हितकारी फल कुल ब्रह्माण्ड को मिलता है, इस प्रकार यह परोपकार चलता है। अतः मानो कि यह ब्रह्माण्ड हमारा है और हम एकरूप हैं यानि आत्मा व परमात्मा एक ही है। इस संदर्भ में जब हम शरीर नहीं हैं तो हम नाशवान शरीर या जगत के साथ अपने ख़्याल को क्यों जोड़ें। क्यों नही जो अमर है, अटल है, हमेश है उसके साथ ख़्याल को जोड़ें? जानो नित्य के संग नाता जोड़ने से हमारे अन्दर अमरता-अजरता व अटलता का भाव जाग्रत होगा जो हमें परमपद से जा जोड़ेगा। इस तरह सुरति शब्द संग जुड़कर यानि चेतन शक्ति चेतना, शब्द आत्मा संग जुड़कर परमात्मा को पा लेगी। इस तरह हमारी चेतना में परमात्मा आ जायेगा। परमात्म भाव मन में आ जायेगा तो सजन श्री शहनशाह हनुमान जी की तरह हमारा ख़्याल, हमारी सोच, परमात्मा की शक्ति के अनुकूल, ज्ञान के अनुकूल, क्रिया के अनुकूल हो जायेगी। फिर जिस प्रकार सजन श्री शहनशाह हनुमान जी ईश्वरीय आज्ञाओं के प्रति समर्पित रह सबसे श्रेष्ठ, सबसे विद्वान,

सबसे गुणवान, सबसे बलवान, सबसे धनवान, सबसे बुद्धिमान व सारी दुनियां में ज्ञानवान कहलाए हमारे लिए भी वैसा उद्यम दिखाना सहज हो जाएगा। आप ही बताओ सजनों जब कोई इतना समृद्ध हो जाता है तो फिर क्या उसके मन में जगत से कुछ प्राप्त करने की इच्छा पैदा हो सकती है? -

'नहीं जी'।

ठीक कहा। तभी तो जगत का उद्धार करने के निमित्त उसका हाथ देने के लिये उठता है और वह सब बाँटता ही बाँटता है। इसी से उसको प्रसन्नता प्राप्त होती है क्योंकि वह मानता है कि 'मेरा मुझमें कुछ नहीं, जो कुछ है सो तेरा'। सजनों जब यह पूरा ब्रह्माण्ड ही उसी का है तो कौन किसको दे रहा है। जिससे प्राप्त किया उसी को तो दे रहा है। एक हाथ से लिया और दूसरे हाथ से दे दिया। इस प्रकार वह निश्छल रहता है उसके मन में खोट नहीं होता क्योंकि वह खालिस सोना यानि सबसे अनमोल हीरा होता है। आपको भी ऐसा ही अनमोल यानि सबसे बहुमूल्य हीरा बनना है। ऐसा करने से आपकी काया-पलट हो जायेगी और आपका आज का यहाँ आना अति शुभ हो जायेगा। अब देखो कि इच्छा शक्ति की पूर्ति हेतु आपके पास ज्ञानशक्ति कैसे और क्योंकर होनी चाहिये ताकि आपका हर कर्म निष्काम हो। निष्काम कर्म सदा मानव धर्म के अनुकूल होता है। निष्काम कर के ही आप धर्मज्ञ, धर्मधारी व स्वतन्त्र हो सकते हो। अब ज्ञान शक्ति को सुनोः-

ज्ञानशक्ति

ज्ञानशक्ति का अर्थ है वह शक्ति या सामर्थ्य जो ज्ञान से उत्पन्न होती है। ज्ञानशक्ति वास्तव में एक बहुआयामी अवधारणा है जो व्यक्तिगत, सामाजिक और सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। ज्ञान शक्ति के माध्यम से ही हम अपने कार्यों के सम्बन्ध में आवश्यक जानकारी प्राप्त कर पाते हैं। इसी के आश्रय से स्वयं को बेहतर तरीके से समझते हुए अपना आत्म विकास कर पाते हैं। अन्य शब्दों में ज्ञानशक्ति ही व्यक्ति को मानसिक और भावनात्मक स्थिरता प्रदान कर, समस्याओं का विश्लेषण करने की व उनका समाधान निकालने की क्षमता प्रदान करती है। यही नहीं ज्ञानशक्ति ही आत्मा की उन्नति यानि आत्मोत्थान का साधन है। आत्मा के सच्चे स्वरूप और इस ब्रह्माण्ड का ज्ञान प्रदान कर जीव को जीवनमुक्त कर देना ही, ज्ञान शक्ति का कार्य है।

इस आशय से ज्ञानशक्ति मनुष्य को आत्मज्ञान प्राप्त करने और उसे सही दिशा में प्रयोग करने की क्षमता प्रदान करती है। यही नहीं ज्ञानशक्ति व्यक्ति को सत्-असत्, जड़-चेतन,

सही-गलत का भेद बता, विवेक सम्पन्न बनाती है। फलतः मनुष्य किसी भी कार्य के संदर्भ में भली भांति सोच-विचार कर उचित निर्णय लेने में कामयाब हो पाता है और एक संतोषी व धीर मानव की तरह, परिस्थितियों से प्रभावित हुए बिना, लक्ष्य प्राप्ति की तरफ आत्मविश्वास के साथ कदम बढ़ा पाता है। इस तरह ज्ञानशक्ति ही मनुष्य को आत्मविश्वासी बना आत्मनिर्भरता से जीवनयापन करने में सक्षम बनाती है। इसी से जीव में जागरूकता व सत्यपरायणता आती है और नैतिकता और धार्मिकता का विकास होता है। ज्ञानशक्ति ही अविद्या व अज्ञान से उत्पन्न अंधविश्वासों, रूढ़िवादिताओं और कष्टों का नाश कर, व्यक्ति को अपने धर्म अथवा कर्त्तव्य कर्मों का बोध कराती है और सत्य मार्ग का वरण कर स्वतन्त्रता से उस पर चलना सिखाती है। इसी शक्ति के प्रयोग द्वारा जीवन में संतुलन, खुशहाली, समृद्धि और संतुष्टि आती है और इसी से मुक्ति प्राप्त होती है। इस महत्ता के दृष्टिगत सजनों आप भी आत्मज्ञान की अग्नि में अज्ञानता का नाश करो ओर आत्मज्ञान से उत्पन्न आत्मसंतोष प्राप्त करो। यही आत्मसंतोष आपको धीरता से, सच्चाई धर्म के रास्ते पर निष्कामता पूर्वक प्रशस्त होने का व परोपकार कमाने का अनमोल अवसर प्रदान करेगा और आपके लिए अपने जीवन के रहस्य का बोध करना सहज हो जाएगा।

सजन जीः- आपने अभी ज्ञान शक्ति के विषय में सुना है। हम एक उदाहरण देते हैं कि मानो आप में से किसी के मन में कुछ बनने की इच्छा पैदा हुई, डॉक्टर, इन्जीनियर या कुछ और बनने की, तो उस इच्छा की पूर्ति हेतु आप ज्ञान प्राप्त करते हो जी।

'हाँ जी'।

जीवन के चार-पाँच वर्ष इस कार्य पर लगाते हो।

'हाँ जी'।

इस हेतु यानि मन की जो इच्छा है कि मैं अमुक बनूँ, जी-तोड़ मेहनत करते हुए किताबें पढ़ते हो और उसी प्रक्रिया द्वारा ज्ञान प्राप्त करते हो जी।

'हाँ जी'।

इस ज्ञान को प्राप्त करने के लिए फिर कॉलेज भी जाते हो।

'हाँ जी'।

सजनों इसी प्रकार अपने मन में उत्पन्न हुई मोक्ष की इच्छा को प्राप्त करने हेतु भी निरंतर सत्संग में आना और हर क्लास में उपस्थित होना और क्लास के साथ जो पाठ्यक्रम की पुस्तकें मिली हुई हैं जैसे कि सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ है, उनका नियमित ढँग से चिन्तन-मनन व अध्ययन करना बनता है ताकि सालाना परीक्षा में उत्तीर्ण होकर मोक्ष की प्राप्ति कर सको।

फिर जिस प्रकार सांसारिक शिक्षा प्राप्त कर, वैसी ही क्रियाएँ करते हुए, नेक-नीयती से संसारी धन कमाते हो वैसे ही आत्मिक ज्ञान का अनुशीलन करते हुए भी, परमार्थी धन कमाना होता है। सजनों जानो कि परमार्थी धन मरणोपरान्त भी साथ जाता है, पर संसारी धन यहीं रह जाता है और जिनके लिये छोड़कर जाते हो उनके लिये लडाई-झगड़े का कारण बनता है। भाई-भाई से लड़ पड़ता है। कलियुग में तो बहुत ही बुरा हाल हुआ पड़ा है और भविष्य में तो और भी अधिक बुरा होने वाला है। सजनों आपके साथ ऐसा न हो, आपका भविष्य अच्छा हो, आनन्दमय हो, ऐसा अच्छा निर्माण कर योग्य बनाने हेतु ही आज आपको यहाँ बुलाया गया है।

अतः अपने जीवन की सर्व प्राथमिकता आत्मिकज्ञान प्राप्त करना समझो। मानो यही ईश्वरीय हुक्म है क्योंकि परमेश्वर कहते हैं कि मेरी शक्ति यानि कुदरत आपको मानव चोला प्रदान करती है और इसके साथ वह विवेक-शक्ति भी बख़्शती है जो कि चौरासी लाख जीवों में मानव के अतिरिक्त किसी के पास नहीं है। आश्चर्य की बात तो यह है कि आप इस संसार में आने के पश्चात् अपनी विवेक-शक्ति खो बैठते हो। इसी कारण अपनी बनत ऐसी बिगाड़ बैठते हो कि कोई भी गुमराह करके गढ्ढे में धकेल जाता है। फिर आप तड़फते हो, सोचते हो पर कोई भी वहाँ सुनने वाला नहीं होता। आपके साथ ऐसा न हो इसीलिए आपको सावधान कर रहे हैं। अब जब हम आपको आत्म-निरीक्षण करवायेंगे तो उसे सूझ-बूझ और गहराई से करना। ऐसा करने पर अधिकतर इन्सान अपने आप को दानवता का प्रतीक पायेंगे। कोई विरला ही दानवीय गुणों से उबरकर जीवन जी रहा होगा। आजकल तो मनुष्य केवल अपने शारीरिक गुणों से ही परिचित है क्योंकि वह तो केवल शरीर को ही सब कुछ मानने लग गया है। वह भूल गया है कि वास्तविक रूप में वह आत्मा है, शरीर नहीं है। ऐसे में आत्मिक गुणों से अपरिचित इन्सान नश्वरता की ओर ही बढ़ता है। इसीलिए हमने सभी माँ-बापों को कहा था कि अपने युवा बच्चों को यहाँ हाजिर करना, पर हालात ऐसे हैं कि बच्चे बड़ों का कहना ही नहीं मानते। हमने ही बच्चों को बिगाड़ दिया है और उनको दुनियाँ में उलझा दिया है। ईश्वर ने जो अंश दिया हमने उसे बाहर की

सजावट में फँसाकर बर्बाद कर दिया है। याद रखो बौद्धिक व ज्ञानशक्ति को छोड़ शरीरों पर आकर्षित होने का दुष्परिणाम चरित्रहीनता होता है। सजनों यही हमारी अपनी करणी का फल है और फल तो भोगना ही पड़ता है। हमने जो किया वो कामनायुक्त होकर किया। चलो जो हुआ सो हुआ पर अब आगे तो सुधर जाओ।

हम मानते हैं कि अब ज्ञान-शक्ति का महत्त्व आपको समझ आ गया होगा। जानो ज्ञान और अज्ञान में अन्तर होता है। ज्ञान जिस कुदरत ने यह शरीर रूपी मशीन बनाई है उसकी कुदरती वाणी ही प्रदान कर सकती है यानि इस मशीनरी का समुचित उपयोग करने का तरीका कुदरती ज्ञान ही जना सकता है। किताबी ज्ञान तो आधा-अधूरा होता है। किताबी ज्ञान व्यक्तिगत ज्ञान होता है जो व्यक्ति-दर-व्यक्ति बदलता रहता है। एक ने कहा मशीनरी को ऐसे चलाओ और दूसरे ने कहा उस प्रकार चलाओ। जितना जिसको समझ आया उसने उतना बता दिया। आज का मानव उन्हीं के अधीन हो गया है और सही मान बैठा है कि यही संसारी ही ज्ञानवान हैं, अतः इन्हीं की बात मानो। सजनों जानो ऐसे सजन परिपूर्ण ज्ञानवान नहीं होते क्योंकि परिपूर्ण ज्ञानवान तो एक ही है - वह है आत्मज्ञानी सजन श्री शहनशाह हनुमान जी। जब भी वह श्री रामचन्द्र जी के सम्मुख आये, उनके अन्तर्घट में आत्मिकज्ञान प्रकाशित हो गया और राम रूप में उनका यथार्थ दर्शन हो गया। फिर वही दर्शन उन्हें अपने हृदय में नज़र आया। ऐसा होने पर एक-दृष्टि, एक दर्शन हो गया। यही विचारधारा हमने पकड़नी है। अब क्रिया शक्ति बदलने का संकल्प लेते रहो और बोलोः

आध्यात्मिक क्रान्ति - जिन्दाबाद, आध्यात्मिक क्रान्ति - जिन्दाबाद

आध्यात्मिक क्रान्ति - जिन्दाबाद

क्रिया शक्ति

व्यापक रूप से क्रियाशक्ति माया रूप से, संसार की सभी क्रियाओं और परिवर्तन का आधार है परन्तु जीव रूप में जो शक्ति उसे क्रियाशील अथवा कर्म करने में सक्षम बनाती है यानि इच्छाओं और ज्ञान को क्रियान्वित करने की क्षमता प्रदान करती है, वह क्रिया शक्ति कहलाती है। चूंकि यह शक्ति हमारे लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए हमें कर्मशील यानि उद्यमी बनाती है और हमारी क्रियाओं को सही दिशा में ले जाती है इसलिए शारीरिक और मानसिक क्रियाक्लापों में इसकी भूमिका अतुलनीय है। बिना इसके किसी भी प्रकार के कार्य जैसे पढ़ाई, व्यवसाय, खेल, चिंतन, मनन आदि करना असंभव है। इस आधार पर हम कह

सकते हैं कि क्रियाशक्ति व्यक्ति की वह आंतरिक शक्ति है जो जीवन के विभिन्न कार्यों को सम्पन्न करने के लिए आवश्यक ऊर्जा और शक्ति प्रदान कर उसे सफल बनाती है।

ज्ञात हो कि ज्ञान शक्ति के साथ मिलकर, क्रियाशक्ति किसी भी क्षेत्र या कला में रचनात्मक प्रगति करने की सामर्थ्य प्रदान करती है। इस तरह यह सृजनात्मकता (**Creativity**) को अभिव्यक्त करने की शक्ति है तथा इसके द्वारा ही व्यक्ति चेतना के निम्नतर स्तर से उठ, उच्चतम स्तर तक पहुँचने में कामयाब हो पाता है। इस आशय से क्रिया शक्ति का मर्म केवल बाह्य क्रियाओं तक ही सीमित नहीं है बल्कि यह तो जीवन के प्रत्येक पहलू में संतुलन और सामंजस्य स्थापित कर, आंतरिक ऊर्जा और चेतना को भी आत्मबोध की दिशा में ले जाती है और लक्ष्य प्राप्ति में सहायक सिद्ध होती है।

सारतः कहें तो जीवन क्रियाशीलता का नाम है क्योंकि मृतक शरीर में कोई क्रिया नहीं होती। इस आशय से कर्म ही जीवन का आधार है। अतः मनुष्य को सदैव अपनी क्रियाशक्ति का प्रयोग ,आत्मज्ञान प्राप्ति द्वारा स्वयं को अनुशासित करने में तथा अपने कर्मों को उचित दिशा प्रदान करने में यानि परम पुरुषार्थ अथवा अच्छे सेवापरक कार्यों में सुनियोजित करने में करना चाहिए। इस तरह अपनी क्रियाशक्ति को सत्यता से धर्म मार्ग पर प्रशस्त कर, उसे अपने समस्त कर्त्तव्यों का कुशलता से निष्कामपूर्वक पालन करना चाहिए। इस हेतु उसे संयमित संतुलित आहार, नियमित अनुशासित जीवनशैली व विभिन्न शारीरिक व्यायामों तथा प्राणायाम के अभ्यास द्वारा शारीरिक क्रियाशक्ति का व भक्ति एवं उपासना के द्वारा मानसिक क्रियाशक्ति का विकास करना चाहिए। इससे शारीरिक कार्यक्षमता एवं सहनशीलता के साथ-साथ मानसिक दृढ़ता, शांति और एकाग्रता की प्राप्ति होगी और कार्य करने की क्षमता का अतुलनीय विकास होगा। सजनों ऐसा ही हो इस हेतु शास्त्र भी कह रहा हैः-

आप कर्म करने वाले सच्चे योगी बनें, निष्काम कर्म करें।

अर्थात्

मन, वचन, कर्म द्वारा सब कामों को सच्चाई और निष्काम भावना से करे।

इस तथ्य के दृष्टिगत आप अपनी इच्छाशक्ति को आत्मज्ञान प्राप्ति में सुनियोजित कर निष्काम कर्म अथवा परोकार के कार्यो में प्रवृत्त करने में कामयाब हों, यही हमारी शुभकामना है।

सजन जीः- सजनों अब स्वयं पर कृपा करो यानि खुद को समझाओ। अब तक कुकर्म-अधर्म कर आत्मिकज्ञान से वंचित रहने की जो भूल हुई, परमात्मा से उसकी क्षमा-याचना करो और अब के बाद ज्ञानशक्ति की ताकत से समुचित क्रिया करने के योग्य बनने के प्रति दृढ़-संकल्पी हो जाओ। जानो ऐसा करने से आप किसी पर भी निर्भर न रहते हुए आत्म-निर्भर हो जाओगे। ऐसा होने पर हर प्रकार की नकारात्मक सोच से आपको छुटकारा मिल जाएगा। इस संदर्भ में कुदरत ने मानव को आत्म-निर्भर होने के लिये सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के रूप में जो कुदरती ज्ञान बख़्शा है जो कि सतयुग का प्रतीक है व सतयुग की संस्कृति को जनाता है, उसे धारण करो। याद रखो यदि आज भी हम अपने भविष्य के प्रति जागृति में नहीं आते और आत्मिकज्ञान प्राप्त करने की अनदेखी करते हैं तो हम कुपुत्र कहलाएंगे। अब कुपुत्र तो दर-दर की ठोकरें खाता ही है क्योंकि उसके पास सम्पूर्ण ज्ञान नहीं होता। ऐसा न हो इस हेतु सजनों मानो कि कुदरत ने हमें मानसिक शक्ति प्रदान की हुई है और इस शरीर रूपी मशीनरी में पूरा ज्ञान भरा हुआ है। बाहर किसी से कुछ भी पूछने की आवश्यकता नहीं है। तो जानो हमें इस मशीनरी का संचालन कुदरती नीति-नियमों अनुसार सुनिश्चित करना है। ऐसा करने में सफल होने के लिये हमे इस शरीर रूपी मशीनरी का सदुयोग करने के नीति-नियम समझने होंगे ताकि यह लम्बी चले और हमें दीर्घायु लाभ प्राप्त हो।

सजनों, आज ध्यान-कक्ष की क्लास के बाद जो क्लास सभा-भवन में लगेगी, वहाँ विस्तृत रूप से शरीर रूपी मशीनरी को इस्तेमाल करने का तरीका समझाया जायेगा ताकि सकारात्मक उत्पादन हो। जानो यही परमार्थ है। सजनों द्वापर युग में जब अर्जुन ने यह परमार्थी कमाई करी तो उसने स्वार्थी और परमार्थी दोनों राज्य प्राप्त कर लिये। सजनों जब अर्जुन ऐसा कर सकता है, तो आप क्यों नहीं कर सकते? अतः दोनों राज्य प्राप्त करने की इच्छाशक्ति दृढ़ रखो। ऐसा करने से निःसन्देह आप लक्ष्य को भेद सकते हो। अब बोलोः-

आध्यात्मिक क्रान्ति - ज़िन्दाबाद, आध्यात्मिक क्रान्ति - ज़िन्दाबाद

आध्यात्मिक क्रान्ति - ज़िन्दाबाद

अब आपने उत्तमता का प्रतीक बनना है जिसका मतलब है कि आत्म-स्मृति में आना है। जानो आत्म-स्मृति में आने की इच्छा, आत्मिकज्ञान के अनुसार अन्तर्घट में क्रिया किए बगैर नहीं हो सकती। अतः अपने अन्दर और अधिक आत्म-विश्वास भरने के लिये अब मिल कर बोलोः-

हम सतयुग के हैं बच्चे,

हम नहीं किसी से कम

हममें असीम शक्ति है, कुछ भी कर सकते हम

चाहे आजमा कर देख लो, चाहे आजमा कर देख लो

हम रहेंगे नम्बर वन।

अब आपने परमात्मा से वायदा किया है और आपको पता ही है कि वह सर्वज्ञ हैं, सबकी जानने वाले हैं अतः वायदा निभाने के प्रति कोई भी सजन कमजोर न पड़ना। इसी के साथ समस्त मानव-जाति तक भी सतवस्तु का सन्देश पहुँचाने का काम, परोपकार का काम समझकर करना और अनथक परिश्रम करने से सकुचाना नहीं। मन्जूर है?

'हाँ जी।'

तो जो वायदा किया वो निभाना पड़ेगा। अब साजन जी का जीवन चरित्र अपने जीवन चरित्र में उतारना है ताकि आप परम-पवित्र बन जाओः-

साजन जी का जीवन चरित्र।

कैसा है परम पवित्र ।।

कैसा है परम पवित्र।

साजन जी का जीवन चरित्र।।

उठ अरे मेरे विश्वास।

बदल डाल जीवन इतिहास।।

जाग अरे तू मेरे प्यार।

अब जगने की बेला है।।

अब जगने की बेला है।।

साजन जी का जीवन चरित्र..............................

जो कुछ साजन जी ने लिखा है।

सतवस्तु के ग्रन्थ में ।।

समझ अरे अब तो वह वाणी।

फिरता क्यों हरबेला है।।

फिरता क्यों हरबेला है।।

साजन जी का जीवन चरित्र................................

बैठा तूं हैरान क्यों।

कर रहा जीवन वीरान क्यों।।

पहचान ले अपनी ताकत को।

ताकतवर बनने की बेला है।।

ताकतवर बनने की बेला है।।

साजन जी का जीवन चरित्र................................

इसी में तेरी शान है।

इसी में तेरी आन है।।

सत्य ज्ञान को धारण कर।

बनना तूने महान है।।

बनना तूने महान है।।

साजन जी का जीवन चरित्र................................

अब सत्यज्ञान धारण करने के प्रति जिसके मन में प्रबल इच्छा पैदा हुई है, वह नत-मस्तक हो जाये ताकि यह सत्य साबित हो जाए। अब आपको सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ का अध्ययन-चितन-मनन करते हुए इस ज्ञान को धारण करने में प्राथमिकता देनी ही होगी तभी कर्मयोगी बनोगे। हम आपको सफलता की कुन्जी बताना चाहते हैं और वह है - समभाव समदृष्टि का स्कूल। इस स्कूल से जो भी सजन हर इतवार आध्यात्मिक यानि आत्मज्ञान प्राप्त करने की क्लास को सुनने-समझने के प्रति प्रबल इच्छाशक्ति रखते हुए, वहाँ से जो भी बताया जाता है उसे धारण कर धीरे-धीरे अपना आत्म-सुधार करना सुनिश्चित कर लेगा, तो कोई कारण नहीं बनता कि उसका आत्मोद्धार न हो। इसके साथ-साथ उस इच्छा की पूर्ति कैसे करनी है, उसका ज्ञान वहाँ से प्राप्त करना होगा। ध्यान कक्ष में इसके साथ ही काम, क्रोध को कैसे हटाना है, वह ज्ञान भी प्रदान किया जाता है। यह क्रिया किस प्रकार करनी है, वह युक्ति भी बताई जाती है ताकि काममुक्त हो सको। इस प्रकार हर सप्ताह आप अपनी एक-एक विकृति ठीक करते जाओ तो आप सफलता को प्राप्त हो सकते हो। अतः इस सफलता को प्राप्त करने हेतु प्रत्येक रविवार कक्षा में आया करो। इस तरह अपने जीवन लक्ष्य की ओर कदम दर कदम बढ़ाते हुए आप जीवन के मकसद को पाने में कामयाब हो यही हमारी शुभकामना है।

जय सीता राम जी।